Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2024 5(1), 1975–1980

HUMANISM AND CULTURAL NATIONALISM IN VIVEKANANDA: A COMPREHENSIVE ASSESSMENT

विवेकानंद में मानववाद एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद: एक समग्र मूल्यांकन

Sudha Sharma [1], Jayantilal Khandelwal [2]

[1] Research Scholar, Department of History, Apex University, Jaipur, India
[2] Assistant Professor, Department of History, Apex University, Jaipur, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i1.2024.4838

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: In this research paper, two important aspects of Swami Vivekananda's thinking, humanism and cultural nationalism, have been discussed in a historical perspective. The basic foundation of Vivekananda's ideology is the thinking of Vedanta, and in continuation thereafter, the Advaita ideology of Adi Guru Shankaracharya is considered. The ideology propounded by Shankaracharya on the basis of the thinking of the Upanishads, Swami Vivekananda propounded it as 'Practical Vedanta' in the public interest. The deep brilliance and energy of Indian culture was present in his thinking, and along with that, cultural inclusion in his ideology was so comprehensive that Netaji Subhash Chandra Bose called him the father of cultural nationalism in India. At present, the concept of cultural nationalism is developing not only in India but in many countries of the world, which is more comprehensive than the political concept.

Hindi: प्रस्तुत शोध आलेख में स्वामी विवेकानंद के चिंतन के दो महत्वपूर्ण पक्ष मानववाद एवं सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विवेचन किया गया है। विवेकानंद की विचारधारा का मूल आधार वेदांत का चिंतन तदंतर निरंतरता में आदि गुरु शंकराचार्य की अद्वैतवादी विचारधारा मानी जाती है। शंकराचार्य ने उपनिषदों के चिंतन के आधार पर जिस विचारधारा का प्रतिपादन किया उसी को आधार बनाकर स्वामी विवेकानंद ने इसे जनहित में 'व्यावहारिक वेदांत' के रूप में प्रतिपादित कर दिया। उनके चिंतन में भारत की संस्कृति का गहन तेज एवं ऊर्जा विद्यमान थी साथ ही उनकी विचारधारा में सांस्कृतिक समावेश इस प्रकार समग्रता से हुआ कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने उन्हें भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पिता कहा। वर्तमान में भारत ही नहीं विश्व के अनेक देशों में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा विकसित हो रही है जो राजनीतिक अवधारणा से अधिक व्यापक है।

Keywords: Humanism, Nationalism, Cultural Nationalism, Colonialism, Paramahamsa, Chicago Speech, Vedanta, Manavdharma मानववाद, राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, उपनिवेशवाद, परमहंस, शिकागो भाषण, वेदांत, मानवधर्म

1. प्रस्तावना

भारत में उभरते सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की पृष्ठभूमि में 19वीं शताब्दी के सामाजिक सांस्कृतिक सुधार आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इन सुधार आंदोलन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचारधारा, एवं कार्य प्रणाली स्वामी विवेकानंद की दिखाई देती है। उनके विचार एवं कार्यों के कारण ही भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने उन्हें अपने प्रेरणा के स्रोत के रूप में माना। इसी क्रम में सुभाष चंद्र बोस द्वारा स्वामी विवेकानंद को भारत के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पिता कहा गया। विषय का चयन करने के संबंध में जिस शोध परिकल्पना का प्रतिपादन एवं समझ विकसित की गई इसका मुख्य आधार यही था की विवेकानंद के चिंतन में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं मानववादी चिंतन किस प्रकार विद्यमान है जिसने भारत के इतिहास एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को एक विशिष्ट दशा एवं दिशा प्रदान की। वस्तुत शोध परिकल्पना किसी शोध के परिणाम के संबंध में एक अपेक्षित कथन होता है। यहां हमारा शोध प्रश्न यह है की स्वामी विवेकानंद क्या भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं मानववादी चिंतन के पिता थे ? इस प्रश्न का जवाब उनके चिंतन, विविध ग्रंथों एवं कार्यों का मूल्यपरक तथा शुद्ध परक शोधपरक ऐतिहासिक विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है। इस विषय की शोध कल्पना के संबंध में शून्य परिकल्पना के चिंतन को आधार बनाकर शोधपरक ऐतिहासिक मीमांसा करने का प्रयास किया गया है। इसी पृष्ठभूमि में विवेकानंद के सैद्धांतिक पशुओं पशुओं पर व्यापक एवं गहन विचार करते हुए उनकी उपादेयता तथा योगदान को स्पष्ट किया गया है। स्वामी विवेकानंद के संबंध में चयन किए गए विषय के उद्देश्यों कार्यक्षेत्र

एवं सीमाओं को विस्तृत रूप से समझना एवं विवेचित करना सर्वप्रथम आवश्यक है। विवेकानंद पर चयन किए गए इस विषय का कार्य क्षेत्र अत्यंत व्यापक है। यह विषय एकेडमिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत उपादेय है। शोध परिकल्पना के अंतर्गत यह विचार प्रतिपादित किया गया है कि विवेकानंद के चिंतन में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद विद्यमान था उनके मानवतावादी चिंतन का प्रभाव भी भारतीय स्वतंत्र संग्राम एवं परिवर्ती युग में देखा जा सकता है।

वस्तुतरू18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद की चुनौती के फलस्वरुप धार्मिक आध्यात्मिक के साथ-साथ राजनीतिक एवं सामाजिक प्रश्न भी उभरने लगे । 19वीं शताब्दी में इन्हीं प्रश्नों की पृष्ठभूमि में वैदिक संस्कृति में वर्णित सनातन चिंतन के आधार पर सामाजिक सांस्कृतिक सुधार आंदोलन के रूप में सनातन चेतना विकसित हुई। जिसने भारत के साथ-साथ पाश्चात्य सत्य की चेतना के साथ हुई अंतःक्रिया का भी कहीं-कहीं विवेचन किया। शास्त्रार्थ के माध्यम से सत्य को प्राप्त करने वाला मानवीय मूल्यों का सनातन रूपी यह धागा वैदिक काल से राजा राममोहन रायए स्वामी दयानंदए विवेकानंदए अरबिंदो, टैगोर, महात्मा गांधी, विनोबा एवं अन्य चिंतकों तक निरंतरता के रूप में देखा जा सकता है। 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के पिता एवं श्साइक्लोनिक हिंदूश् कह गए विवेकानंद में सनातन चिंतन का उत्कर्ष देखा जा सकता है । उनके द्वारा वेदों के मर्म-उपनिषदों का गूढ़ अध्ययन करते हुए सनातन चिंतन को प्रखरता प्रदान की गई। उन्होंने सनातन के ही संबंध में मानव धर्म की संकल्पना करते हुए श्मानव की सेवा को ईश्वर की सेवा बताया। उन्होंने सनातन के आधार पर जिस मानव धर्म का उल्लेख किया उसे उन्होंने श्सर्वस्वीकार्य मूल्य वाला सार्वभौम धर्मश् बताया। इसी सनातन चिंतन को उन्होंने 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में प्रतिष्ठित किया। यहां उन्होंने सनातन को जिस रूप में प्रतिपादित किया वह उपनिषदों की परंपरा के अंतर्गत विकसित हुई महोपनिषद में वर्णित श्वसुधैव कुटुंबकमश् की अवधारणा थी। उनके चिंतन का मूल स्रोत वेदांत दर्शन, बौद्ध दर्शन, राजा राममोहन राय की विचारधारा, श्रीमद् भागवत गीता एवं रामकृष्ण परमहंस विचारधारा में निहित था। बौद्ध चिंतन पद्धति से प्रभावित होकर उन्होंने सामूहिक मोक्ष एवं सबके कल्याण पर बल दिया। अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस से उन्होंने शक्ति, सेवा, प्रेम, ज्ञान, बुद्धि वैराग्य का चिंतन प्राप्त किया। श्परमहंसश् (सर्वोच्च हंस) संन्यासियों का एक उच्चतर रूप होता है , जिसमें सन्यासी परमानंद में रहते हुए सक्रिय जागृत अवस्था में रहता है । उनके अनुयाई उन्हें श्री हरि रामकृष्ण परमब्रह्मश् भी कहते हैं । स्वामी रामकृष्ण कोलकाता के दक्षिणेश्वर स्थित आद्य काली रूप- भवतारिणी माता के मंदिर में पुजारी थे। गुरु से शिक्षा प्राप्त कर ही उन्होंने नर को नारायण मानना प्रारंभ कर दिया।

भारतीय चिंतन पद्धति में ईश्वर से साक्षात्कार एवं मोक्ष प्राप्त के लिए ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग, राज योग के मार्ग बताए गए हैं । इन मार्गों का अंतिम उद्देश्य एक ही है किंतु एक व्यक्ति अपने तर्क, स्वभाव एवं अभिरुचि के आधार पर इनमें से एक मार्ग का चयन कर सकता है। विवेकानंद तीनों मार्गो के समन्वय पर भी बोल देते हैं उनके अनुसार ज्ञान कर्म के बिना एवं कर्म ज्ञान के बिना बेकार है। वे ष्एकम सत्यं विप्र बहुदा वदंतीष् की औपनिषदिक चिंतन की निरंतरता में विश्वास करते थे। उनकी ऊर्जापूर्ण आध्यात्मिक चिंतन पद्धति को सर्व स्वीकार्य सर्वे भोम धर्म के रूप में समझा जा सकता है। उन्होंने वेदों एवं श्रीमद् भागवत गीता में वर्णित सत्य की मार्ग सनातन को महत्व प्रदान किया। इसी क्रम में इन्होंने विश्व बंधुत्व की संकल्पना को पोषित कर सार्वत्रिक धर्म के विकास पर बल दिया। वे आधुनिक काल के एक महत्वपूर्ण चिंतक थे जिन्होंने वेदों में वर्णित मानवता , भाईचारा, सहनशीलता एवं सनातन का परिचय विश्व से करवाया। उन्होंने सभी धर्म को सत्य के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने वैज्ञानिक परिपेक्ष में अपने विचारों को प्रस्तुत कर सनातन में निहित वैज्ञानिकता को प्रतिष्ठित किया। वे मानव के भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों प्रकार की उन्नति पर बल देते थे। भारतीय संस्कृति में अत्यंत गहरी पैठ होने के कारण सुभाष चंद्र बोस ने उन्हें भारत के श्सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पिताश् कहा है।

विवेकानंद ने 1886 में अपने गुरू की मृत्यु के बाद संन्यास धारण कर लिया एवं धार्मिक ग्रन्थों का विशद् अध्ययन किया। उन्होंने गुरू के सिद्धान्तों को भारत ही नहीं समूचे विश्व में फैलाया। उनकी विद्या, वाक्पटुता, आध्यात्मिक तीक्ष्णता एवं आकर्षक व्यक्तित्व के कारण उनके अनुयायियों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी, जिनमें आम किसानों से लेकर राजा महाराजा तक सम्मिलित थे। 1893 में ऐसे लोगों की सहायता से एवं अपार कष्ट के बाद उन्होंने शिकागो के विश्व प्रसिद्ध 'पार्लियामेंट ऑफ रिलिजंस' (विश्व धर्म संसद) ने भाग लिया। 11 सितम्बर 1893 को 10 बजे विश्व धर्म सम्मेलन कोलम्बस हॉल में शुरू हुअ। इस सम्मेलन में विविध धर्मों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त विश्व के बड़े-बड़े दार्शनिक एवं वैज्ञानिक उपस्थित थे। इस सम्मेलन में सम्मिलित विद्वानों में रोमन कैथलिक सबसे बड़ा पादरी गिबन्स, डॉ बेरोज (प्रतिनिधि चयन समिति का अध्यक्ष), थियोसोफिकल सोसायटी की प्रतिनिधि डॉ. ऐनीबेसेन्ट, प्रतापचन्द्र मजूमदार, नागरकर (बम्बई) सम्मिलित थे।

विवेकानंद के पहले दिन के भाषण से ही सभी लोग भावविभोर हो उठे। उन्होंने एक श्लोक उद्धृत किया और कहा कि मनुष्यों की रूचि विचित्र और भिन्न है कोई सीधे मार्ग पर और कोई टेढ़े मार्ग पर चलता है, परन्तु अन्त में सब एक ही स्थान पर पहुंचते हैं ठीक उसी प्रकार जैसे सारी नदियाँ अन्त में सागर में पहुंचती हैं। उनके विचारों के कारण अमेरिका एवं विश्व के अन्य लोग अत्यधिक प्रभावित हुए। अनेक लोग उसी समय उनके अनुयायी बन गये। उनके प्रवचन को सुनकर न्यूयार्क हैराल्ड नामक समाचार पत्र ने लिखा ''वे बड़े प्रबल वक्ता हैं यह उनको ईश्वर की देन है। उनके गेरूए वस्त्र, तेजस्वी चेहरा और कुशाग्र बुद्धि तथा हृदय से निकले शब्दों और संगीतमय वाणी का अद्भुत प्रभाव होता है। उन्हें सुनकर ऐसा लगता है कि हम लोग कितने मूर्ख हैं जो इनके देश के समान प्रबुद्ध देश में अपनी मिशनरियों को ज्ञान का प्रकाश देने के लिए भेजते हैं।'' एक दूसरे पत्र में विवेकानन्द का चित्रण करते हुए कहा गया कि ''वे दिव्य शक्ति के वक्ता हैं।'' स्वामी जी के इन प्रवचनों के उपरांत रामकृष्ण के उपदेश विश्वश् शक्ति के रूप में माने जाने लगे। विवेकानन्द पहले भारतीय थे, जिन्होंने पाश्चात्य सर्वोच्चता पर प्रश्न चिह्न लगाया। शिकागो संसद में उन्होंने अपने प्रवचनों में सभी धर्मों की आधारभूत समानता पर बल देते हुए अपने धर्म को महान एवं दूसरों के धर्म को छोटा कहने की दूषित प्रवत्ति की भी आलोचना की। उन्होंने विविध धर्मों के अनुयायियों को अपने धर्म के बुनियादी सिद्धान्तों के प्रति सच्चा रहने का अनुरोध किया और यह भी कहा ''ईसाई को मुसलमान या हिन्दू नहीं बनना है और न हिन्दू या बौद्ध को ईसाई बनना है, किन्तु इनमें से प्रत्येक को दूसरे की भावना को आत्मसात् करना चाहिए एवं साथ ही अपनी वैयक्तिक्ता को बरकरार रखते हुए

विकास के अपने सिद्धान्तों के अनुसार आत्मविकास करना चाहिए। अमेरिका के विविध केन्द्रों में विवेकानन्द द्वारा वेदान्त सोसायटी एवं अपने मतों की स्थापना की गई। इसके पश्चात् विवेकानन्द ने इंग्लैंड, फ्रांस यूरोपीय देशों का भी भ्रमण किया एवं अपने विचारों का भी प्रसार किया। इंग्लैंड में मार्गरिट नोबल नामक महिला उनके संपर्क में आई और उनकी शिष्या बन गई। यही महिला बाद में सिस्टर निवेदिता कहलाईं। वे कलकत्ता के एक हिन्दू बस्ती में रहने लगीं एवं लोगों के साथ हिन्दू धर्म की गहन चर्चा किया करती थी। उनके द्वारा 1904 में 'दि वेब ऑफ इंडियन लाईफ'' नामक पुस्तक लिखी गई। जिसमें उन्होंने बताया कि हिन्दू धर्म के तत्वों को समझने के लिए सहानुभूति चाहिए।17

1897 में उन्होंने अपने गुरू की याद में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण परमहंस के सिद्धान्तों का आधार वेदान्त दशन बनाया गया। इस मिशन का उद्देश्य सामाजिक एवं धार्मिक सुधार करना रखा गया। इसका मानना है कि मानव के भीतर की उच्चतम आध्यात्मिकता का विकास किया जाए। उनके अनुसार ईश्वर निराकर एवं मानव बुद्धि से परे एवं सर्वव्यापी है। आत्मा ईश्वर का ही अंश है। विश्व के सभी धर्म मौलिक रूप से एक हैं, किन्तु वे अपने विविध रूपों में ईश्वर तक पहुंचने के अलग-अलग मार्ग मात्र हैं। ईश्वर वस्तुतः साकार एवं निराकार दोनों रूपों में होता है एवं उसकी अनुभूति विविध प्रतीकों के रूप में की जा सकती है। जिस प्रकार विविध भाषाओं में प्रयुक्त किये जाने वाले विविध शब्द एक ही पदार्थ को व्यक्त करते हैं, उसी प्रकार अल्लाह, जीसस, कृष्ण वे विविध नाम हैं जिनके द्वारा हम ईश्वर की पूजा करते हैं। विवेकानन्द कहते थे कि अगर आप ईसाई पैदा हुए हैं तो आप एक अच्छे ईसाई बनिये, यदि हिन्दू पैदा हुए हैं तो अच्छे हिन्दू बनिये, यदि मुसलमान पैदा हुए हैं तो अच्छे मुसलमान बनिये। उन्होंने उपनिषदों की व्यावहारिक व्याख्या करते हुए इसका मानव के लिए उपयोग करने पर बल दिया। उनका यह भी मानना था कि वेदान्तवादी अवधारणा एकमात्र हिन्दुओं की सम्पत्ति ही नहीं है। एकेश्वरवाद के संबंध में वे इस्लाम की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि इस्लाम में एकेश्वरवाद को मानने में सबको पीछे छोड़ दिया है। वे एक ही ईश्वर के अलग-अलग नामांे से उपासना करने की बात को लेकर विविध समुदायों का आपसी झगड़ा करने के विरूद्ध थे।18

विवेकानंद कहते थे ''धर्म न पुस्तकों में है, न बुद्धिवादियों की राय में और न तर्क में है, तर्क, मत, सिद्धान्त, रूढ़िवादी परम्पराए धर्म में सहायक तत्व अवश्य हो सकते हैं, किन्तु वास्तविक धर्म तो केवल आत्मज्ञान ही है।'' सदियों से धर्म एवं मजहब के नाम पर पादरी, पुजारी, मुल्ला जैसे धर्म के ठेकेदार धर्म के नाम पर नाली का गन्दा पानी इसमें वितरित कर रहे हैं। जबकि अमृत का शवत झरना हमारे पास मौजूद है। उनका कहना था ''मैं उस ईश्वर में विश्वास नहीं कर सकता जो यहाँ धरती पर हमें रोटी न दे और स्वर्ग में शाश्वत, सुख एवं मोक्ष का आश्वासन दे। यद्यपि विवेकानन्द वेदान्तवादी विचारधारा पर बल देते रहे, किन्तु उन्होंने मूर्तिपूजा को भी स्वीकार किया। उनके गुरू रामकृष्ण ने अपने जीवन में ही न केवल काली माँ की पूजा एवं उच्चतम आध्यात्मिक जीवन की अनुरूपता (अनुरोध) दिखला दी बल्कि उन्होंने इससे भी और अधिक दिखलाया था। वे मानते थे कि मूर्तिपूजा का उपयोग मनुष्य की उच्चतम आध्यात्मिक व्यग्रता के विकास के एक उत्तम साधन के रूप में हो सकता है। साथ ही उन्होंने आधुनिक हिन्दू धर्म की बुराईयों को भी उजागर किया।19

वेदान्तवादी विचारधारा से ही उनके विचार दर्शन संबंधी अनेक सूत्रों का विकास हुआ है। उनका मानना था, जातिप्रथा विभेदकारी है इसलिए इसका उन्मूलन कर दिया जाना चाहिए। वे इसका उन्मूलन कर सभी के साथ न्यायोचित व्यवहार करना चाहते थे एवं धर्म को पुरोहितों की तानाशाही से मुक्त करने का प्रयास करते थे। उनका मानना था कि क्योंकि मानव ईश्वर का अंश है इसलिए मानव की सेवा ही ईश्वर की सर्वोच्च सेवा है। यदि ईश्वर का हर आत्मा में वास है तो कोई जाति ऊँची या नीची कैसे हो सकती है, कोई मालिक और कोई गुलाम कैसे हो सकता है। उन्होंने लिखा है ''एकमात्र ईश्वर जिसमें मैं विश्वास करता हूँ वह है सभी आत्माओं का कुल योग और सबसे पहले मेरे भगवान सभी जातियों के कुष्ठ पीड़ित, दरिद्र हैं।''' उनका मानना था कि जिस प्रकार वह शरीर जिसकी समस्त शिराओं में रक्त का समुचित प्रवाह नहीं होता, वह रोगग्रस्त हो जाता है उसी प्रकार वह समाज भी रूग्ण हो जाता है जिसका एक बड़ा भाग पिछड़ा हुआ शिक्षा एवं बुनियादी सुविधाओं से वंचित है। अपने स्फूर्त संदेश में उन्होंने पुनः कहा 'पतन के उन पाँच सात सौ वर्षों के बारे में सोचिए जब बालिग और समझदार लोग केवल इस बात पर बहस करते रहे कि वे पानी का गिलास दायें हाथ से पिएं या बाएं हाथ से और कुली पांच बार करें या छः बार। हमारा धर्म रसोई तक सीमित हो गया, हमारा ईश्वर खाना पकाने की 'हांडी' या 'बटोई' में बस गया और हमारे धर्म का सार बन गया, ''मुझे स्पर्श न करो मैं पवित्र हूँ।'' स्वामीजी ने जाति व्यवस्था की समस्या के समाधान के लिए जनजन में आध्यात्मिक एवं धर्म निरपेक्ष ज्ञान के व्यापक प्रचार करने का उपदेश दिया। उनका कहना था कि सभी के लिए अवसरों के द्वार उन्मुक्त एवं खुले छोड़ दिये जाए, जिससे सभी लोग जातिप्रथा की बुराईयों को देख एवं समझ सकें। अपमान एवं शोषण का खुलकर विरोध कर सकें। वे कहते थे ''जो कुछ भी तुम्हें भौतिकरूप से, बौद्धिक रूप से या आध्यात्मिक रूप से कमजोर बनाता है, उसे तुम ज़हर समझो। उसमें जीवन नहीं है तो वह कभी सत्य नहीं हो सकता। सत्य बल देता है, सत्य शुद्धि है, सत्य सम्पूर्ण ज्ञान है।''20

स्वामीजी फ्रांस, मिस्र, वियना, कन्सटेन्टिनोपल एवं एथेन्स की यात्रा करने के उपरांत स्वदेश पहुंचे। स्वदेश में उन्होंने अपने दो महत्वपूर्ण मठों (अद्वैत आश्रम) की स्थापना की। पहला मठ कलकत्ते के समीप बेलूर में एवं दूसरा वर्तमान उत्तराखंड के चम्पावत जिले में मायावती नामक स्थान में बनाया गया।'' 1900 में वे पेरिस में होने वाले विश्वधर्म सम्मेलन में सम्मिलित हुए। पेरिस में वे वहाँ के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान जुलियस वाइस से भी मिले। यहाँ उन्होंने शिवलिंग एवं शाक्त धर्म के संबंध में अपने व्याख्यान देते हुए बताया कि जिस प्रकार ईसाई धर्म में हाली की यूनियन का अर्थ मानव भक्षण नहीं है, उसी प्रकार शिवलिंग की पूजा में भी अश्लीलता नही हैं। स्वास्थ्य खराब होने के कारण वे अगले भाषण न दे सके। इस बीच उनके मित्र एवं प्रमुख शिष्य मिस्टर सेवियर, जो कि मायावती में रहते थे, की मृत्यु हो गई। परिणामस्वरूप भारत लौटने के उपरांत वे सीधे मायावती पहुंचे। स्वामीजी द्वारा भारत में अनेक पत्र भी प्रकाशित किये गये। जिनमें मद्रास में ब्रह्मवादी, मायावती में प्रबुद्ध भारत (1896 अंग्रेजी में), कलकत्ता में उद्बोधन (बंगाली में) सम्मिलित थे। 4 जुलाई 1902 को स्वयं स्वामीजी की भी मृत्यु हो गई। इस समय तक रामकृष्ण मिशन के पांच मठ स्थापित हो चुके थे- बेलूर, मायावती, काशी, प्रयाग, बैंगलोर। उनके द्वारा मिशन की शाखाएं न्यूयार्क, बोस्टन, वाशिंगटन, पिट्सवर्ग, सेनफ्रान्सिस्को जैसे शहरों में स्थापित की गई।

विवेकानंद ने 1886 में अपने गुरू की मृत्यु के बाद संन्यास धारण कर लिया एवं धार्मिक ग्रन्थों का विशद् अध्ययन किया। उन्हांेने गुरू के सिद्धान्तों को भारत ही नहीं समूचे विश्व में फैलाया। उनकी विद्या, वाक्पटुता, आध्यात्मिक तीक्ष्णता एवं आकर्षक व्यक्तित्व के कारण उनके अनुयायियों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी, जिनमें आम किसानों से लेकर राजा महाराजा तक सम्मिलित थे। 1893 में ऐसे लोगों की सहायता से एवं अपार कष्ट के बाद उन्होंने शिकागो के विश्व प्रसिद्ध 'पार्लियामेंट ऑफ रिलिजंस' (विश्व धर्म संसद) ने भाग लिया। 11 सितम्बर 1893 को 10 बजे विश्व धर्म सम्मेलन कोलम्बस हाॅल में शुरू हुआ। इस सम्मेलन में विविध धर्मों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त विश्व के बड़े-बड़े दार्शनिक एवं वैज्ञानिक उपस्थित थे। इस सम्मेलन में सम्मिलित विद्वानों में रोमन कैथलिक सबसे बड़ा पादरी गिबन्स, डॉ बेरोज (प्रतिनिधि चयन समिति का अध्यक्ष), थियोसोफिकल सोसायटी की प्रतिनिधि डॉ. ऐनीबेसेन्ट, प्रतापचन्द्र मजूमदार, नागरकर (बम्बई) सम्मिलित थे। 20

विवेकानंद के पहले दिन के भाषण से ही सभी लोग भावविभोर हो उठे। उन्होंने एक श्लोक उद्धृत किया और कहा कि मनुष्यों की रूचि विचित्र और भिन्न है कोई सीधे मार्ग पर और कोई टेढ़े मार्ग पर चलता है, परन्तु अन्त में सब एक ही स्थान पर पहुंचते हैं ठीक उसी प्रकार जैसे सारी नदियाँ अन्त में सागर में पहुंचती हैं। उनके विचारों के कारण अमेरिका एवं विश्व के अन्य लोग अत्यधिक प्रभावित हुए। अनेक लोग उसी समय उनके अनुयायी बन गये। उनके प्रवचन को सुनकर न्यूयार्क हैराल्ड नामक समाचार पत्र ने लिखा ''वे बड़े प्रबल वक्ता हैं यह उनको ईश्वर की देन है। उनके गेरूए वस्त्र, तेजस्वी चेहरा और कुशाग्र बुद्धि तथा हृदय से निकले शब्दों और संगीतमय वाणी का अद्भुत प्रभाव होता है। उन्हें सुनकर ऐसा लगता है कि हम लोग कितने मूर्ख हैं जो इनके देश के समान प्रबुद्ध देश में अपनी मिशनरियों को ज्ञान का प्रकाश देने के लिए भेजते हैं।'' एक दूसरे पत्र में विवेकानन्द का चित्रण करते हुए कहा गया कि ''वे दिव्य शक्ति के वक्ता हैं।'' स्वामी जी के इन प्रवचनों के उपरांत रामकृष्ण के उपदेश विश्वश् शक्ति के रूप में माने जाने लगे। विवेकानन्द पहले भारतीय थे, जिन्होंने पाश्चात्य सर्वोच्चता पर प्रश्न चिह्न लगाया। शिकागो संसद में उन्होंने अपने प्रवचनों में सभी धर्मों की आधारभूत समानता पर बल देते हुए अपने धर्म को महान एवं दूसरों के धर्म को छोटा कहने की दूषित प्रवत्ति की भी आलोचना की। उन्होंने विविध धर्मों के अनुयायियों को अपने धर्म के बुनियादी सिद्धान्तों के प्रति सच्चा रहने का अनुरोध किया और यह भी कहा ''ईसाई को मुसलमान या हिन्दू नहीं बनना है और न हिन्दू या बौद्ध को ईसाई बनना है, किन्तु इनमें से प्रत्येक को दूसरे की भावना को आत्मसात् करना चाहिए एवं साथ ही अपनी वैयक्तिक्ता को बरकरार रखते हुए विकास के अपने सिद्धान्तों के अनुसार आत्मविकास करना चाहिए। अमेरिका के विविध केन्द्रों में विवेकानन्द द्वारा वेदान्त सोसायटी एवं अपने मतों की स्थापना की गई। इसके पश्चात् विवेकानन्द ने इंग्लैंड, फ्रांस यूरोपीय देशों का भी भ्रमण किया एवं अपने विचारों का भी प्रसार किया। इंग्लैंड में मार्गरिट नोबल नामक महिला उनके संपर्क में आई और उनकी शिष्या बन गई। यही महिला बाद में सिस्टर निवेदिता कहलाईं। वे कलकत्ता के एक हिन्दू बस्ती में रहने लगीं एवं लोगों के साथ हिन्दू धर्म की गहन चर्चा किया करती थी। उनके द्वारा 1904 में 'दि वेब ऑफ इंडियन लाईफ'' नामक पुस्तक लिखी गई। जिसमें उन्होंने बताया कि हिन्दू धर्म के तत्वों को समझने के लिए सहानुभूति चाहिए।21

1897 में उन्होंने अपने गुरू की याद में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण परमहंस के सिद्धान्तों का आधार वेदान्त दर्शन बनाया गया। इस मिशन का उद्देश्य सामाजिक एवं धार्मिक सुधार करना रखा गया। इसका मानना है कि मानव के भीतर की उच्चतम आध्यात्मिकता का विकास किया जाए। उनके अनुसार ईश्वर निराकर एवं मानव बुद्धि से परे एवं सर्वव्यापी है। आत्मा ईश्वर का ही अंश है। विश्व के सभी धर्म मौलिक रूप से एक हैं, किन्तु वे अपने विविध रूपों में ईश्वर तक पहुंचने के अलग-अलग मार्ग मात्र हैं। ईश्वर वस्तुतः साकार एवं निराकार दोनों रूपों में होता है एवं उसकी अनुभूति विविध प्रतीकों के रूप में की जा सकती है। जिस प्रकार विविध भाषाओं में प्रयुक्त किये जाने वाले विविध शब्द एक ही पदार्थ को व्यक्त करते हैं, उसी प्रकार अल्लाह, जीसस, कृष्ण वे विविध नाम हैं जिनके द्वारा हम ईश्वर की पूजा करते हैं। विवेकानन्द कहते थे कि अगर आप ईसाई पैदा हुए हैं तो आप एक अच्छे ईसाई बनिये, यदि हिन्दू पैदा हुए हैं तो अच्छे हिन्दू बनिये, यदि मुसलमान पैदा हुए हैं तो अच्छे मुसलमान बनिये। उन्होंने उपनिषदों की व्यावहारिक व्याख्या करते हुए इसका मानव के लिए उपयोग करने पर बल दिया।22 उनका यह भी मानना था कि वेदान्तवादी अवधारणा एकमात्र हिन्दुओं की सम्पत्ति ही नहीं है। एकेश्वरवाद के संबंध में वे इस्लाम की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि इस्लाम में एकेश्वरवाद को मानने में सबको पीछे छोड़ दिया है। वे एक ही ईश्वर के अलग-अलग नामो से उपासना करने की बात को लेकर विविध समुदायों का आपसी झगड़ा करने के विरूद्ध थे।

विवेकानंद कहते थे ''धर्म न पुस्तकों में है, न बुद्धिवादियों की राय में और न तर्क में है, तर्क, मत, सिद्धान्त, रूढ़िवादी परम्पराए धर्म में सहायक तत्व अवश्य हो सकते हैं, किन्तु वास्तविक धर्म तो केवल आत्मज्ञान ही है।'' सदियों से धर्म एवं मजहब के नाम पर पादरी, पुजारी, मुल्ला जैसे धर्म के ठेकेदार धर्म के नाम पर नाली का गन्दा पानी इसमें वितरित कर रहे हैं। जबकि अमृत का शाश्वत झरना हमारे पास मौजूद है। उनका कहना था ''मैं उस ईश्वर में विश्वास नहीं कर सकता जो यहाँ धरती पर हमें रोटी न दे और स्वर्ग में शाश्वत, सुख एवं मोक्ष का आश्वासन दे। यद्यपि विवेकानन्द वेदान्तवादी विचारधारा पर बल देते रहे, किन्तु उन्होंने मूर्तिपूजा को भी स्वीकार किया। उनके गुरू रामकृष्ण ने अपने जीवन में ही न केवल काली माँ की पूजा एवं उच्चतम आध्यात्मिक जीवन की अनुरूपता (अनुरोध) दिखला दी बल्कि उन्होंने इससे भी और अधिक दिखलाया था। वे मानते थे कि मूर्तिपूजा का उपयोग मनुष्य की उच्चतम आध्यात्मिक व्यग्रता के विकास के एक उत्तम साधन के रूप में हो सकता है। साथ ही उन्होंने आधुनिक हिन्दू धर्म की बुराईयों को भी उजागर किया।23

वेदान्तवादी विचारधारा से ही उनके विचार दर्शन संबंधी अनेक सूत्रों का विकास हुआ है। उनका मानना था, जातिप्रथा विभेदकारी है इसलिए इसका उन्मूलन कर दिया जाना चाहिए। वे इसका उन्मूलन कर सभी के साथ न्यायोचित व्यवहार करना चाहते थे एवं धर्म को पुरोहितों की तानाशाही से मुक्त करने का प्रयास करते थे। उनका मानना था कि क्योंकि मानव ईश्वर का अंश है इसलिए मानव की सेवा ही ईश्वर की सर्वोच्च सेवा है। यदि ईश्वर का हर आत्मा में वास है तो कोई जाति ऊँची या नीची कैसे हो सकती है, कोई मालिक और कोई गुलाम कैसे हो सकता है।24 उन्होंने लिखा है ''एकमात्र ईश्वर जिसमें मैं विश्वास करता हूँ वह है सभी आत्माओं का कुल योग और सबसे पहले मेरे भगवान सभी जातियों के कुष्ठ पीड़ित, दरिद्र हैं।''' उनका मानना

था कि जिस प्रकार वह शरीर जिसकी समस्त शिराओं में रक्त का समुचित प्रवाह नहीं होता, वह रोगग्रस्त हो जाता है उसी प्रकार वह समाज भी रूग्ण हो जाता है जिसका एक बड़ा भाग पिछड़ा हुआ शिक्षा एवं बुनियादी सुविधाओं से वंचित है। अपने स्फूर्त संदेश में उन्होंने पुनः कहा 'पतन के उन पाँच सात सौ वर्षों के बारे में सोचिए जब बालिग और समझदार लोग केवल इस बात पर बहस करते रहे कि वे पानी का गिलास दायें हाथ से पिएं या बाएं हाथ से और कुली पांच बार करें या छः बार। हमारा धर्म रसोई तक सीमित हो गया, हमारा ईश्वर खाना पकाने की 'हांडी' या 'बटोई' में बस गया और हमारे धर्म का सार बन गया, ''मुझे स्पर्श न करो मैं पवित्र हूँ।'' स्वामीजी ने जाति व्यवस्था की समस्या के समाधान के लिए जन जन में आध्यात्मिक एवं धर्मनिरपेक्ष ज्ञान के व्यापक प्रचार करने का उपदेश दिया। उनका कहना था कि सभी के लिए अवसरों के द्वार उन्मुक्त एवं खुले छोड़ दिये जाए, जिससे सभी लोग जातिप्रथा की बुराईयों को देख एवं समझ सकें। अपमान एवं शोषण का खुलकर विरोध कर सकें। वे कहते थे ''जो कुछ भी तुम्हें भौतिक रूप से, बौद्धिक रूप से या आध्यात्मिक रूप से कमजोर बनाता है, उसे तुम ज़हर समझो। उसमें जीवन नहीं है तो वह कभी सत्य नहीं हो सकता। सत्य बल देता है, सत्य शुद्धि है, सत्य सम्पूर्ण ज्ञान है।''25

स्वामीजी फ्रांस, मिस्र, वियना, कन्सटेन्टिनोपल एवं एथेन्स की यात्रा करने के उपरांत स्वदेश पहुंचे। स्वदेश में उन्होंने अपने दो महत्वपूर्ण मठों (अद्वैत आश्रम) की स्थापना की। पहला मठ कलकत्ते के समीप बेलूर में एवं दूसरा वर्तमान उत्तराखंड के चम्पावत जिले में मायावती नामक स्थान में बनाया गया।'' 1900 में वे पेरिस में होने वाले विश्वधर्म सम्मेलन में सम्मिलित हुए। पेरिस में वे वहाँ के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान जुलियस वाइस से भी मिले। यहाँ उन्होंने शिवलिंग एवं शाक्त धर्म के संबंध में अपने व्याख्यान देते हुए बताया कि जिस प्रकार ईसाई धर्म में हाली की यूनियन का अर्थ मानव भक्षण नहीं है, उसी प्रकार शिवलिंग की पूजा में भी अश्लीलता नही हैं।26 स्वास्थ्य खराब होने के कारण वे अगले भाषण न दे सके। इस बीच उनके मित्र एवं प्रमुख शिष्य मिस्टर सेवियर, जो कि मायावती में रहते थे, की मृत्यु हो गई। परिणामस्वरूप भारत लौटने के उपरांत वे सीधे मायावती पहुंचे। स्वामीजी द्वारा भारत में अनेक पत्र भी प्रकाशित किये गये। जिनमें मद्रास में ब्रह्मवादी, मायावती में प्रबुद्ध भारत (1896 अंग्रेजी में), कलकत्ता में उद्बोधन (बंगाली में) सम्मिलित थे। 4 जुलाई 1902 को स्वयं स्वामीजी की भी मृत्यु हो गई। इस समय तक रामकृष्ण मिशन के पांच मठ स्थापित हो चुके थे- बेलूर, मायावती, काशी, प्रयाग, बैंगलोर। उनके द्वारा मिशन की शाखाएं न्यूयार्क, बोस्टन, वाशिंगटन, पिट्सवर्ग, सेनफ्रान्सिस्को जैसे शहरों में स्थापित की गई।

2. उपसंहार

स्वामी विवेकानंद के संपूर्ण चिंतन, पुस्तकों एवं कृत्यों का विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि मानव गरिमा का मूल आधार जिस प्रकार वेदांत के चिंतन में दिखाई देता है। इसी चिंतन की निरंतरता हमें शंकराचार्य के माध्यम से स्वामी विवेकानंद तक एक श्रृंखलाबद्ध रूप में दिखाई देती है। स्वामी विवेकानंद ने भारत के इसी गूढ़ चिंतन को आम जनता तक पहुंचाने का प्रयास किया इसके साथ-साथ उन्होंने इसे कल्याणकारी चिंतन से भी जोड़ने का प्रयास किया उनकी विचारधारा में समाजवादी , राष्ट्रवादी चिंतन एवं आध्यात्मिक चिंतन की समग्रता देखी जा सकती है।उनके चिंतन में गहनता के साथ-साथ व्यापकता भी दिखाई देती है इसी कारण समाज का कमजोर वर्ग, दलित वर्ग जनजातीय समुदाय एवं अल्पसंख्यक समुदाय भी उनकी विचारधारा से जुड़ जाते हैं। उनकी विचारधारा के आधार पर बनाए गए रामकृष्ण मिशन जैसे आश्रम भारत ही नहीं आज विश्व के विभिन्न भागों में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। उपनिषद के चिंतन में जिस मानव गरिमा की बात मानव के आध्यात्मिक उत्थान के संबंध में कही गई है उसे ही विस्तारित कर स्वामी विवेकानंद ने अपने मानववादी चिंतन का विकास किया। भारतीय संस्कृति की विविधता में एकता का सूत्र विकसित करने वाला चिंतन विवेकानंद में दिखाई देता है। इसी कारण नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने उन्हें भारत में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पिता कहा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शेखावत, महेन्द्र, आधुनिक चिन्तन में वेदान्त म०प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ० 20
नेहरू, जवाहर लाल, भारत एक खोज
द कम्पलीट वक्र्स ऑफ स्वामी विवेकानन्द, भाग-प्प्, पृ० 291
शेखावत, महेन्द्र, आधुनिक चिन्तन में वेदान्त म०प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ० 23
वही, पृ० 25
वहीं, पृ० 25
वही. पृ० 25
वही, पृ० 25
विवेकानन्द साहित्य, खण्ड-9, पृ० 120
वहीं, खण्ड-2, पृ० 227
वही, पृ० 234
भारत में विवेकानन्द, पृ० 305
शेखावत, महेन्द्र, आधुनिक चिन्तन में वेदान्त म०प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पृ० 26
वही, पृ० 26

विवेकानन्द साहित्य, खण्ड-6, पृ० 243
वहीं खण्ड-2, पृ० 234
वहीं, पृ० 234
वहीं, पृ० 235
वहीं, पृ० 235
वहीं, पृ० 235
विवेकानन्द साहित्य, खण्ड-9, पृ० 85
भारत में विवेकानन्द, पृ० 118
वही, पृ० 39
वही, पृ० 123
विवेकानन्द के उद्गार, पृ० 70
विवेकानन्द साहित्य, खण्ड-2, पृ० 259